विजेता जागो-फरवरी **2024**

1.परिवर्तन **-"**और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु अपने मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल बदल जाए**..."** (रोम **12:2)**। हमारा विश्व दृष्टिकोण और सोच हमारी संस्कृति और विकल्पों का परिणाम है। प्रार्थना करें कि मसीह में आपका विश्वास और पवित्रशास्त्र के प्रति समर्पण आपको परिवार और समाज में परिवर्तन का कारण बना देगा।

2. संतोष **-"**मैं जैसी भी परिस्थिति में हूं, मैंने संतुष्ट रहना सीख लिया है**" (**फिलि **4:11**बी**)**। परमेश्वर को जानने और उसकी शक्ति, बुद्धि और देखभाल पर विश्वास करने से हमारे साथ या हमारे आस-पास जो कुछ भी होता है उसमें शांति और विश्वास मिलेगा। आज परमेश्वर को धन्यवाद दें कि वह पूरी तरह भरोसेमंद हैं और उनसे कहें कि वह आपको संतुष्टि सिखाएं।

3. भरोसा **-**“अपने सम्पूर्ण हृदय से प्रभु पर भरोसा रखो और अपनी समझ का सहारा मत लो। उसी को स्मरण करके सब काम करना, और वह तुम्हारे लिए मार्ग सीधा कर देगा” **(**नीति **3:5.6)**। जीवन में सबसे महत्वपूर्ण निर्णय हमारे हृदय और इच्छा का प्रभु के प्रति समर्पण है। प्रार्थना करें कि आप एक ऐसे व्यक्ति बनें जो प्रभु पर पूरा भरोसा करता है।

4. आशीष बांटना **- "**यहोवा तुम्हारे लिये अपना अच्छा भण्डार खोलेगा**...** और तुम्हारे सब कामों पर आशीष देगा**" (**व्यवस्था **28:12)**। यदि आपने अपने जीवन में परमेश्वर की प्रचुर आशीषों का अनुभव किया है, तो इसे केवल अपने तक ही सीमित न रखें। उसे महिमा दें और उन लोगों के साथ आशीष साझा करें जो आपसे मिलते हैं।

5. सीखना**-"**जो वचन पर ध्यान देता है, वह कल्याण पाता है, और जो प्रभु पर भरोसा रखता है, वह धन्य है**" (**नीति **16:20)**। अपने दैनिक भक्ति समय के प्रति उत्साही रहें और परमेश्वर के वचन का अनुयायी बनना सीखें। यह आपके जीवन में शांति, आनंद और ज्ञान का एक पुख्ता मार्ग है और दूसरों के लिए आशीष का झरना होगा।

6.सुरक्षा में सोयें**–** “प्रभु का भय मानने से जीवन मिलता है, ताकि मनुष्य बुराई से अछूता, संतुष्ट होकर सो सके” **(**नीति **19:23)**। जितना अधिक हम सर्वशक्तिमान ईश्वर को जानेंगे और उसकी आराधना करेंगे उतनी ही हमारी व्यक्तिगत समस्याएँ छोटी हो जाएँगी। उनमें विश्राम करने वाली आत्मा मन और शरीर के लिए एक शक्तिशाली उपचार है। उसमें हम सुरक्षित सो सकते हैं।

7. सच्चा धन **- "**इसलिए यदि आप अधर्मी धन के उपयोग में वफादार नहीं रहे हैं, तो सच्चा धन आपको कौन सौंपेगा**" (**लूका **16:11)?** परमेश्वर के जन के रूप में हमें इस दुनिया में जिम्मेदार नागरिक होने और समाज की भलाई के लिए अपने उदाहरण से योगदान देने के लिए बुलाया गया है। परमेश्वर हमारी वफादारी को अनन्त आशीष से पुरस्कृत करें।

8. परमेश्वर के संपर्क में **- "**मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं**" (**निर्ग **20:1)**। मसीह में विश्वास के माध्यम से हमें वही प्रतिज्ञाएँ विरासत में मिलती हैं जो परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों को दी थीं। हम परमेश्वर के साथ घनिष्ठ संबंध रख सकते हैं और उसके साथ निरंतर संपर्क में रह सकते हैं। इस दुनिया में कुछ भी ऐसे विशेषाधिकार के बराबर नहीं है।

9. सहभागिता **-"**मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं**" (**निर्ग **20:1)**। परमेश्वर मेरी ओर मुड़ते हैं. वह मुझे उन चीज़ों से आज़ाद करना चाहता है जो मुझे रोकती हैं, क्योंकि वह मुझसे प्यार करता है। वह अपने प्रेम के प्रति मेरी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा कर रहा है, क्योंकि वह मुझे महत्व देता है और मेरे साथ संगति रखना चाहता है।

10. अपने पड़ोसी से प्यार करना -**"**मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं**" (**निर्ग **20:1)**। जिस प्रकार प्रभु मेरे साथ व्यवहार करते हैं उसी प्रकार वे मुझसे दूसरों के साथ व्यवहार करने की अपेक्षा करते हैं। उनमें मुझे अपने रिश्तों के नवीनीकरण के लिए प्रेरणा और शक्ति मिलती है। इस तरह मैं अपने पड़ोसियों के लिए शांति और आशा का इंसान बन सकता हूं।

11. विशेष -**"**मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं**" (**निर्ग **20:1)**। कुछ भी नहीं, न ही पैसा, संपत्ति या अन्य प्रतिभूतियाँ **परमेश्वर** के प्रति हमारी वफादारी का मुकाबला कर सकती हैं। वह हमारी अनन्य भक्ति चाहता है। प्रत्येक अच्छा उपहार उसी की ओर से आता है और वह ख़ुशी से हमें वह सब प्रदान करता है जिसकी हमें आवश्यकता होती है।

12. छवि -**"**मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूं**" (**निर्ग **20:1)**। एक पुरुष का एक महिला के साथ विवाह उस रिश्ते की छवि है जो **परमेश्वर** हमारे साथ रखना चाहता है। जिस तरह से एक पुरुष और एक महिला के घनिष्ठ संबंध के माध्यम से नया जीवन जन्म लेता है, उसी तरह **परमेश्वर** अपने साथ हमारे रिश्ते के माध्यम से नए, आध्यात्मिक जीवन को जन्म देना चाहते हैं।

13. लचीलापन - **"**मनुष्य योजना बनाता है, परन्तु यहोवा उसे सफल करते है**" (**नीति **16:9)**। परमेश्वर ने हमें जो भी संसाधन सौंपे हैं, उनके प्रति योजना बनाना और जिम्मेदार होना महत्वपूर्ण है।लेकिन लचीले बनो**!** केवल प्रभु ही सर्वज्ञ हैं। यदि वह आपकी योजनाओं को विफल होने देता है और एक नई दिशा दिखाता है तो उसकी संप्रभुता के प्रति समर्पण करें।

14. सामान -**"**परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो**...** क्योंकि जहां तुम्हारा धन है, वहीं तुम्हारा मन भी रहेगा**" (**मत्ती **6:21)**। यह आश्चर्यजनक है कि लोग वर्षों में कितना सामान जमा कर सकते हैं। सुनिश्चित करें कि जिस दिन आप पैसे से खरीदी जा सकने वाली सभी चीजें छोड़ देंगे, उस दिन स्वर्ग में एक खजाना आपका इंतजार कर रहा होगा।

15. संकट -**"**तेरा मार्ग समुद्र में था, और तेरे मार्ग बड़े जल में थे, और तेरे पदचिह्न का पता न चलता**" (**भजन **77:19)**। हमारे लिए परमेश्वर के तरीकों और व्यवहारों को पूरी तरह से समझना असंभव है। वह परमेश्वर हैं और हम इंसान हैं।' लेकिन परमेश्वर हमसे प्यार करता है और इसलिए हम जीवन की उथल-पुथल में उस पर भरोसा कर सकते हैं। जान लें कि कोई भी संकट उसके नियंत्रण से बाहर नहीं है।

16. घमंड -“घमण्ड से यत्न करने के सिवा कुछ नहीं मिलता, परन्तु अच्छी सलाह से बुद्धि मिलती है” **(**नीति **13:10)**। मनुष्य के हृदय में मुख्य पाप अभिमान है। अभिमान स्वयं को दूसरों और स्वयं परमेश्वर के विरुद्ध बढ़ा देता है। ऐसे हृदय के लिए प्रार्थना करें जो नेतृत्व करने वाली आत्माओं के प्रति विनम्र और संवेदनशील हो। यह अपने सर्वोत्तम रूप में मर्दानगी है।

17. परमेश्वर का आश्चर्य - “रेखाएँ मेरे लिए सुखद स्थानों में गिरी हैं; सचमुच, मेरी विरासत मेरे लिये सुन्दर है” **(**भजन **16:6)**। जैसे एक दूल्हा अपनी दुल्हन को सबसे अच्छे और सबसे सुंदर से आश्चर्यचकित करना चाहता है, वैसे ही प्रभु उन लोगों की परवाह करता है जो उससे प्यार करते हैं। उसने आपको जो दिया है और जो जीवन में वास्तविक मूल्य और सुंदरता का है, उसे संजोने में सक्षम होने के लिए प्रार्थना करें।

18. मिरास -**"**भला मनुष्य अपने नाती-पोतों के लिये भाग छोड़ जाता है, परन्तु पापी का धन धर्मी के लिये रखा रहता है**" (**नीति **13:22)**। बच्चों को अच्छे उद्धरण की जरूरत है। एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए प्रार्थना करें जिसके व्यवहार, विकल्पों और प्राथमिकताओं में परमेश्वर और उसके परिवार के प्रति प्रेम स्पष्ट हो। अपने चरित्र को अपने परिवार को प्रेरित करने दें।

19. आप अकेले नहीं हैं **-** जब आप दूसरों को यीशु के बारे में बताते हैं, तो त्रिएक **परमेश्वर** आपके बोलते समय आपके साथ होता है। **परमेश्वर** का शुक्र है कि उसने उम्र के अंत तक हमेशा आपके साथ रहने का वादा किया है। **"...**और देखो, जगत के अंत तक मैं सदैव तुम्हारे साथ हूँ**" (**मत्ती **28:20)**।

20. शक्तिशाली प्रार्थना **-** आज **परमेश्वर** का धन्यवाद करें कि जब आप किसी अन्य व्यक्ति पर हाथ रखते हैं और उनके लिए प्रार्थना करते हैं, तो आप पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की शक्ति से प्रार्थना करते हैं। "और विश्वास की प्रार्थना बीमार को बचा लेगी, और प्रभु उसे उठा खड़ा करेगा। और यदि उस ने पाप किए हों, तो वह क्षमा किया जाएगा" (याकूब **5:15)**।

21. हम में से एक तिहाई **-** दुनिया की एक तिहाई से अधिक आबादी यीशु को नहीं जानती है, और वे उसे जानने वाले किसी भी व्यक्ति को भी नहीं जानते हैं। प्रार्थना करें कि जिन लोगों ने अभी तक यीशु के बारे में नहीं सुना है उन्हें अवसर मिले। **"**सारी दुनिया में जाओ और हर प्राणी को सुसमाचार प्रचार करो**" (**मरकुस **16:15)**।

22. परिवर्तन **- परमेश्वर** का शुक्र है कि जब आप उसके करीब रहते हैं तो आप लगातार बढ़ती महिमा के साथ उसकी समानता में परिवर्तित होते जा रहे हैं। **"**परन्तु हम सब उघाड़े चेहरे से प्रभु की महिमा को दर्पण की भाँति देखते हुए उसी छवि में परिवर्तित होते जा रहे हैं**..." (2** कुरिं **3:18)**।

23. बुद्धि **-"**क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो बुद्धि प्राप्त करता है, और वह मनुष्य जो समझ प्राप्त करता है**" (**नीति **3:13)**। सच्चा ज्ञान प्रभु के भय से शुरू होता है। समझ में सीखने और प्रतिबिंबित करने की इच्छा शामिल है। एक ऐसा व्यक्ति बनने के लिए प्रार्थना करें जो अपने आवेगों से प्रेरित न हो बल्कि जो **परमेश्वर** की दृष्टि में सत्य और सही है उस पर विचार करता हो।

24. चेतावनी **-** दुनिया और उसकी दौलत प्रभु यीशु के साथ वास्तविक और गहरे रिश्ते में बाधा बन सकती है। मरकुस **4:19** में यीशु ने चेतावनी दी है कि **"**जब इस जीवन की चिंताएँ आती हैं, तो धन का धोखा और अन्य वस्तुओं की लालसा वचन को दबा देती है, और उसे निष्फल बना देती है।**" -** चेतावनी पर ध्यान दें और प्रभु को अपने जीवन में प्रथम स्थान दें।

25.प्रार्थना **-** लूका **22** गतसमिनी के बगीचे में यीशु की पीड़ा के बारे में बताता है। पद **41** के अनुसार, अपनी आगामी मृत्यु का सामना करते हुए: **"**वह घुटने टेककर प्रार्थना करने लगा**"**। **-** क्योंकि **परमेश्वर** हमेशा उन लोगों के करीब रहते हैं जिनकी आत्मा टूटी हुई है और हमारे सबसे कठिन समय में हमारे बचाव के लिए आने को तैयार हैं, इसलिए प्रार्थना को प्राथमिकता दें।

26.प्रभाव **-** एक पिता का प्रार्थना और प्रभु के साथ संवाद का जीवन उसके बच्चों पर प्रभाव डालता है। इसहाक ने अपने पिता इब्राहीम पर विश्वास किया जब उसने उसे बिना तर्क के भी परमेश्वर पर भरोसा करने के लिए कहा। **"**हे मेरे पुत्र, होमबलि के लिये मेम्ने का प्रबंध परमेश्वर आप ही करेगा**"** उत्पत्ति **22:8**। **-** परमेश्वर, मुझे एक ऐसा इंसान बनाओ, जिसके प्रभाव से उसके बच्चों का आप पर विश्वास मजबूत हो**!**

27.महसूस होना **-** हर आदमी एक सुखी परिवार चाहता है। भजन **128** वर्णन करता है कि यह कैसे हो सकता है। **"**इसी तरह वह मनुष्य धन्य होगा जो प्रभु का भय मानता है**" ...** अपने काम में सफलता, अपने विवाह में खुशी और सुरक्षित वातावरण में बड़े होने वाले बच्चों के साथ। **-** पिता, हम पुरुषों की ओर से प्रार्थना करते हैं, कि वे अपने परिवार में आपकी आशीष प्राप्त कर सकें।

28. आशा **- "**प्रभु उन लोगों के लिए अच्छा है जिनकी आशा उस पर है, उनके लिए जो उसे खोजते हैं।**" (**विलापगीत **3:25)** शोध से पता चलता है कि प्रत्येक **10** आत्महत्याओं में से **8** पुरुष होते हैं। मुख्य कारण निराशा है**. -** प्रभु यीशु, क्या हम ईसाई लोग वह आशा लेकर आ सकते हैं जो केवल आप ही हताश दुनिया को दे सकते हैं**!**

29. शिक्षा **- "**जो अपने बेटे को ताड़ना देने से इनकार करता है, वह उस से प्रेम नहीं करता; जो उस से प्रेम करता है, वह उसे ताड़ना देने में नहीं हिचकिचाता।**" (**नीतिवचन **13:24).** समाज परिवार में अनुशासन पर प्रतिबंध लगाना चाहता है। **-** अपने बच्चों की शिक्षा में मार्गदर्शन के लिए वचन के प्रति समर्पण और अपने बच्चों के प्रति अपने प्रेम को अनुमति दें।